बाल साहित्य शृँखला

छत्रपति शिवाजी

Scanned by CamScanner

छत्रपति शिवाजी

संकलित

सुरुचि प्रकाशन
केशव कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली–110055

Scanned by CamScanner

प्रकाशकीय

अपने महापुरुषों का स्मरण भारत में एक श्रेष्ठ परम्परा रही है। कथा-कहानियों से लगाकर पुस्तकों तक उनके कर्तृत्व और आदर्श जीवन का सजीव चित्रण किया गया है। यदा-कदा पर्वों के माध्यम से भी हमने उनका स्मरण करना अपना पुनीत कर्तव्य समझा है। रामनवमी में भगवान राम का, शिवरात्रि को भगवान शिव का, नवरात्रों में भगवती दुर्गा माँ का स्मरण, वसन्तोत्सव में वाणी की अधिष्ठात्री सरस्वती की वन्दना, हिन्दू साम्राज्य दिवस पर छत्रपति शिवाजी महाराज का उत्सवाचरण हमारे लिए शिक्षाप्रद और प्रेरणादायक रहा है।

इसी शृंखला में सुरुचि प्रकाशन ने महापुरुषों, वैज्ञानिकों, ऋषि मुनियों, साधु संतों, समाज सुधारकों व क्रान्तिकारियों का साहित्य-पुष्पों द्वारा स्मरण किया है। इस पुस्तक के माध्यम से हम प्रस्तुत कर रहे हैं हिन्दु विजय युग प्रवर्तक छत्रपति शिवाजी महाराज का जीवन चरित्र, जिन्होंने देश व धर्म की रक्षा के लिऐ सतत संघर्ष किया। वे एक कुशल प्रशासक, महान सेनानायक तथा अदम्य साहस, शौर्य एवं स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति थे।

संपादक

Scanned by CamScanner

छत्रपति शिवाजी

एक छोटा बालक छोटे से सिंहासन पर बैठा है। उसके सिपाही गाँव के पटेल को पकड़ कर ले आये हैं, क्योंकि उसने एक अनाथ विधवा पर अत्याचार किया था। पटेल के हाथ पैर बंधे हुए हैं।

वास्तव में अनाथ, असहायों का संरक्षण करना ही पटेल का कर्तव्य था। परन्तु वह बड़ा दुष्ट और घमंडी था। उसने कल्पना तक नहीं की थी कि यह छोटा बालक उसकी जाँच-पड़ताल कराने का कभी साहस करेगा। परन्तु उस बालक राजपुत्र ने पटेल को केवल पकड़वाया ही नहीं, बल्कि उसे न्याय के लिए प्रस्तुत किया। सब कुछ सुन लेने पर यह बात बिलकुल स्पष्ट हो गयी कि उस पटेल ने घोर अपराध किया था।अपने दृढ़ एवं कड़े स्वर में बाल राजकुमार ने निर्णय दिया- "इसके दोनों हाथ और दोनों पैर काट दिये जाएँ।" सभी सन्न रह गये। राजकुमार की न्यायप्रियता देख, वे लोग केवल चकित ही नहीं हुए अपितु उन्हें अमित आनन्द भी हुआ। लोग आपस में चर्चा करने लगे, "देखो तो, हमारा यह नन्हा राजकुमार कितना न्यायप्रिय है। दुष्टों का उसे थोड़ा भी भय नहीं है। हर अपराधी को वह उचित दंड देता है। दीन-दुखी, दलित एवं दरिद्र-जनों के लिए उसके हृदय में अपार दया तथा करुणा भरी है। उनकी सहायता करना तथा उनका संरक्षण करना उसका प्रण है। सबसे बड़ी बात यह है कि वह सब स्त्रियों का माता के समान आदर करता है। हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि बड़ा होकर यह अपनी मातृभूमि का रक्षण तो करेगा ही परन्तु धर्म का भी उद्धार करेगा। अत: हमें उसे अवश्य सहयोग देना चाहिये।"

Scanned by CamScanner

शिवाजी का जन्म

वह बालक राजकुमार था–शिवाजी। इस घटना के समय उसकी आयु केवल चौदह वर्ष ही थी। उसके छोटे से राज्य में पुणे और आसपास के छोटे–छोटे गाँवों का समावेश था। शिवाजी का जन्म सन् 1630 में शिवनेरी दुर्ग में हुआ। पिता शाहजी भोंसले व माता जीजा बाई थीं। उसके पिता शाहजी बीजापुर के सुलतान के सेनापति थे। पिता को अपने पुत्र का स्वभाव पूरी तरह से ज्ञात था। विदेशी शासक के सामने न झुकने वाले, सिंह के समान अपने निर्भय पुत्र का ध्यान आते ही शाहजी आनंदित होते थे। शिवाजी की यह निर्भयता शाहजी के सम्मुख जिस प्रसंग के द्वारा प्रकट हुई, वह भी बड़ा मनोरंजक है।

एक बार शाहजी अपने पुत्र को बीजापुर के सुलतान के दरबार में ले गये। उस समय शिवाजी की आयु बारह वर्ष की भी नहीं थी। दरबार में जाते ही प्रथा के अनुसार शाहजी ने जमीन को हाथ लगाकर सुलतान को तीन बार सलाम किया। उसने अपने पुत्र को भी सुलतान को सलाम करने के लिए कहा। वह तनकर खड़ा हो गया और उसने अपना मस्तक कुछ पीछे हटाया। "मैं पराये शासकों के सामने कभी नहीं झुकूंगा," उसके मन का यह निश्चय मानो उसकी तीव्र दृष्टि से प्रकट हो रहा था। सिंह की चाल और शान के साथ वह दरबार से निकल आया।

बीजापुर के सुलतान के दरबार में आज तक इस प्रकार का व्यवहार करने की हिम्मत किसी ने नहीं की थी। उस छोटे बच्चे का धैर्य देखकर सभी लोग आश्चर्यचकित रह गये थे।

अपने पुत्र के ऐसे कृत्यों के कारण शाहजी बिल्कुल क्रोधित नहीं होते थे बल्कि मन ही मन उन्हें आनन्द होता था। दुर्दैव से स्वतंत्र राजा बनने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त नहीं हुआ था। परन्तु शाहजी अपने पुत्र को एक

Scanned by CamScanner

स्वतंत्र राजा के रूप में देखना चाहते थे।

कदाचित, आपके मन में प्रश्न उठेगा कि धैर्य, शौर्य, मातृभूमि की भक्ति, धर्म के प्रति अपार निष्ठा व विश्वास आदि दिव्य गुण शिवाजी ने कैसे प्राप्त किये? इसका बहुत बड़ा श्रेय उसकी माता जीजाबाई को है। बाल्यकाल से ही जीजाबाई उसे रामायण, महाभारत तथा पुराणों में वर्णित वीरों, सत्पुरुषों एवम् साधुसंतों की कहानियाँ सुनाती थीं। इन वीर-कथाओं तथा धर्म-कथाओं को सुनते-सुनते शिवाजी के मन में राम, कृष्ण, भीम या अर्जुन के समान बनने के विचार उठते थे। शिवाजी पर परमेश्वर की और भी एक कृपा रही। शिक्षक और मार्गदर्शक के रूप में उन्हें दादाजी कोण्डदेव जैसे महापुरुष प्राप्त हुए थे। कर्नाटक प्रान्त में किसी समय भव्य-दिव्य विजयनगर का साम्राज्य था। उसकी कथाएँ उन्हें जहाँ-तहाँ सुनने के लिए मिलती थीं, उनसे भी शिवाजी को प्रेरणा मिली।

'शिवनेरी' का सौभाग्य

केवल 16 वर्ष की छोटी आयु में शिवाजी ने एक किला जीता। उस किले का नाम था तोरणा। केसरिया रंग का पवित्र ध्वज, भगवान का भगवा झंडा तोरणा दुर्ग पर फहराने लगा। शिवाजी ने अपने सैनिकों को, स्वराज्य की नींव डालनेवाले उस दुर्ग को, पूर्ण रूप से मजबूत बनाने की आज्ञा दी। दुर्ग में जब खुदाई प्रारंभ हुई तब वहाँ सुवर्ण मुद्राओं से भरे घड़े निकले। कदाचित देवी लक्ष्मी द्वारा स्वराज्य-स्थापना के लिए भेजा हुआ वह उपहार था।

तोरणागढ़ के उपरान्त शिवाजी एक के बाद एक किले जीतने लगे। शिवाजी के दुर्ग जीतने के समाचार बीजापुर के सुलतान के कानों तक पहुँचे। शिवाजी को रोकने के लिए सुलतान ने एक कपट

Scanned by CamScanner

रचा। धोखा देकर उसने शाहजी को कैद कर लिया। अफवाह फैल गयी थी कि शाहजी को बंदीगृह में तरह-तरह की यातनाएँ दी जा रही हैं।

शिवाजी और उनकी माता के लिऐ यह समाचार बहुत व्यथित करने वाला था। उधर, एक समाचार यह था कि बीजापुर का सरदार फतेहखान बड़ी सेना के साथ शिवाजी पर आक्रमण करने के लिए निकला है तथा बीजापुर दरबार का दूसरे सरदार फरादखान को शिवाजी के बड़े भाई संभाजी पर हमला करने के लिए भेजा गया है। शिवाजी को डराने, धमकाने तथा काबू में लाने के लिये ही यह सब कांड रचा गया था। बीजापुर का सुलतान सोच रहा था कि ऐसा करने से शिवाजी डर कर उनकी शरण में आएगा। नहीं तो, अपने पिता का जीवन संकट में पाकर वह अवश्य समर्पण करेगा। शिवाजी बहुत चिंतित हुए। उस कठिन अवसर पर शिवाजी की पत्नी सईबाई ने एक मन्त्रणा दी। सईबाई केवल चौदह वर्ष की थी। उसने शिवाजी से कहा- "आप इस बात पर इतने चिंतित क्यों हैं? ऐसा कुछ कीजिये कि आप के पिता भी मुक्त हो जायें और स्वराज्य भी बना रहे। प्रथम, इस शत्रु का नाश कीजिये।" सईबाई सचमुच वीरपत्नी थी।

शिवाजी ने तुरंत निर्णय लिया। निकट का ही दुर्ग पुरंदर बीजापुर के सुलतान के अधीन था। शिवाजी ने अपने स्नेहभरे शब्दों से वहाँ के दुर्गाधिपति का हृदय जीत लिया। फिर उस दुर्ग पर उन्होंने अपनी एक सेना रख दी। जब फतेहखान अपनी सेना लेकर आया तो शिवाजी की सेना ने पुरंदर के आश्रय से उसके साथ घमासान युद्ध किया। शिवाजी के सैनिक इतने पराक्रमी थे कि फतेहखान मैदान छोड़कर भाग निकला। उधर संभाजी ने भी फरादखान को पराजित किया।

Scanned by CamScanner

इस प्रकार युद्धों में तो विजय हुई, परन्तु पिता शाहजी को कैसे बचाया जाये, इसकी शिवाजी को घोर चिन्ता लगी थी। शिवाजी को एक युक्ति सूझी। उनके शस्त्रों जैसी उनकी बुद्धि भी पैनी थी। उस समय दिल्ली में बादशाह शाहजहाँ का राज्य था। शिवाजी ने उसे पत्र लिखा– "मेरे पिताजी को बीजापुर के सुलतान ने कारागृह में डाल दिया है। उनके वहाँ से मुक्त होते ही, मैं और मेरे पिताजी, हम सब लोग आपकी सेवा में आने के लिए बड़े उत्सुक हैं।" बीजापुर के सुलतान को इस बात का पता चला। सुलतान इस बात को भलीभाँति जानता था कि दिल्ली का बादशाह बीजापुर पर आक्रमण करने की ताक में ही रहता है। यदि बादशाह इस समय बीजापुर पर आक्रमण करता है, तो उसकी स्थिति बहुत दयनीय हो जायेगी। अत: उसने सम्मान के साथ शाहजी को मुक्त किया। इस प्रकार पराक्रम और राजनैतिक चातुर्य, दोनों का उचित उपयोग कर शिवाजी ने स्वराज्य के बड़े संकट को मात दी।

जब शिवाजी 28 वर्ष के थे तब कोंडाणा, पुरंदर, प्रतापगढ़, राजगढ़, चाकण, आदि चालीस दुर्गों पर स्वराज्य का झंडा फहर रहा था। इस समय भारत के पश्चिमी तट पर अंग्रेज, पुर्तगाली आदि विदेशी लोगों ने आना शुरू कर दिया था। ये विदेशी लोग किसी दिन सम्पूर्ण भारत को खतरे में डाल सकते है, इसकी शिवाजी को पूर्व कल्पना थी। देश को उनसे बचाने के लिए उन्होंने समुद्र किनारे पर दुर्ग बांधना प्रारंभ किया। उन्होंने युद्धोपयोगी जहाज बनवाये और अपनी नौसेना खड़ी की। विदेशी सत्ताओं से देश को जो खतरा था उसे सबसे पहले शिवाजी ने आँका। उनके आक्रमणों को रोकने की उन्होंने व्यवस्था की थी। शिवाजी एक दूर द्रष्टा थे।

Scanned by CamScanner

शत्रुओं का काल

सुलतान आदिलशाह ने देखा कि शिवाजी का स्वराज्य का स्वप्न पूर्णत: साकार हो रहा है। वह एक के बाद एक विभिन्न दुर्गों पर अपना नियन्त्रण करता जा रहा है। वह अपने आप को असहाय अनुभव करने लगा। सुलतान की एक उपमाता थी उलियाबेगम। एक दिन उसने स्वयं दरबार बुलाया व सब उपस्थित सैन्य अधिकारियों को "शिवाजी को पकड़ने के लिए आह्ववान किया"।

तब एक लम्बा चौड़ा, हट्टाकट्टा सेनापति अफ़जलखान ने इसकी ज़िम्मेदारी ली। वह आदिलशाही दरबार का प्रथम श्रेणी का सेनापति था। वह जितना पराक्रमी था उतना ही क्रूर और कपटी भी था। सुलतान ने पच्चीस हजार सैनिकों की एक सशक्त सेना उसके साथ भेजी।

सबसे पहले अफजलखान ने तुलजापुर की देवी का मन्दिर नष्ट किया। तुलजापुर की भवानी शिवाजी की कुलस्वामिनी थी। अफजलखान ने स्वयं हथौड़ा चलाकर उस मूर्ति के टुकड़े किये। इसी प्रकार उसने पंढरपुर की मूर्ति भी भ्रष्ट की। उसकी करतूतों की जानकारी शिवाजी को मिल रही थी। अफ़जलखान यह जानता था कि जबतक शिवाजी अपने दुर्ग में है या घने जंगलों में है, तब तक उसको पराजित करना बहुत कठिन है। वह सोचता था कि, मन्दिरों को नष्ट करने से, गऊओं की हत्या से और स्त्रियों को भ्रष्ट करने से वह अवश्य प्रतिशोध के लिऐ मैदान में निकल आएगा। तब वह शिवाजी को आसानी से पराजित कर पायेगा।

परन्तु शिवाजी भी बहुत कुशाग्र बुद्धि के थे-अफजलखान की योजना उनके ध्यान में आ गयी। किला छोड़कर मैदान में युद्ध करने से खान की ही विजय की संभावना रहेगी, यह वे भलीभाँति जानते थे। अत:

Scanned by CamScanner

उन्होंने प्रतापगढ़ जाने का निश्चय किया। जावली के घने जंगल में प्रतापगढ़ नाम का यह दुर्ग उन्होंने नया-नया बनवाया था। किसी प्रकार खान को प्रतापगढ़ की ओर लाने तथा वहाँ उससे युद्ध करने की शिवाजी ने योजना बनायी। इसी समय उन्होंने माँ भवानी देवी के स्वप्न दर्शन किये। देवी ने उन्हें आशीर्वाद दिया, "तुम्हारी विजय होगी!"

अफजलखान की यह इच्छा थी कि शिवाजी प्रतापगढ़ से उतरकर मैदान में आ जाते। इस हेतु उसने अपना एक दूत शिवाजी के पास भेजा। दूत को उसने बहुत सी सूचनाएँ गुप्त रुप से दी थीं। दूत शिवाजी के पास पहुँचा। बड़े सौम्य शब्दों में वह कहने लगा, "खानसाहब तो आपके पिताजी के बड़े मित्र हैं। वे किसी भी प्रकार आपका अहित नहीं करेंगे। आप चलें और उनसे मिलें।" इसके उत्तर में शिवाजी ने एक बड़ा स्तुतिपूर्ण पत्र लिखा और वह अपने विशेष दूत के साथ खान के पास भेजा। शिवाजी ने उस पत्र में इस प्रकार लिखा, "आप तो मुझे चाचा के समान आदरणीय हैं। आप मुझे मेरे अपराधों के लिए क्षमा करें। उचित यह होगा कि प्रतापगढ़ आकर आप मेरा उद्धार करें, और मुझे बादशाह के सम्मुख ले जाएँ।" शिवाजी के पत्र का नम्र एव प्रीतियुक्त भाव देखकर खान भुलावे में आ गया। शिवाजी का भेजा हुआ दूत बड़ा चतुर था। उसने खान के सामर्थ्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की और शिवाजी की भीरुता की खिल्ली उड़ायी। खान बहुत प्रसन्न हुआ।

अपने दलबल के साथ खान जावली के जंगल में पहुँचा। प्रतापगढ़ दुर्ग के ठीक नीचे ही उसने अपना डेरा डाला। यह तय हुआ था कि अफजलखान और शिवाजी मित्र की भाँति मिलेंगे। यह भी तय हुआ था कि शिवाजी के बहुत डर जाने के कारण अफजलखान और शिवाजी की एकान्त में भेट होगी और दोनों के अंगरक्षक कुछ दूरी पर खड़े रहेंगे।

Scanned by CamScanner

एक ही दिन बचा था। दूसरे दिन भेंट होनेवाली थी। फिर उस रात्रि में शिवाजी के मित्रों को भला नींद कैसे आती! नेताजी, तानाजी, कान्होजी तथा शिवाजी के अन्य एकनिष्ठ सेनापति अपनी-अपनी सेना लेकर दुर्ग से नीचे उतरे और जंगल में छिप गये। वे आक्रमण के लिए सिद्ध थे। उन्हें यह सूचना प्राप्त थी कि दुर्ग से सांकेतिक तोप की गर्जना सुनते ही उन्हें शत्रु-सेना पर धावा बोलना है और उसका नाश करना है। रात समाप्त हुई। सूरज निकला। नित्य की भाँति स्नानादि से निवृत्त होकर शिवाजी ने भगवान शंकर की पूजा की। उन्होंने सिर पर शिरस्त्राण पहना तथा देह पर लौहकवच धारण किया। उनकी कमर में 'भवानी' तलवार लटक रही थी और बाहु में बाघनख भी था। भवानी माँ का स्मरण करते हुऐ शिवाजी दुर्ग से नीचे उतरे और अफजलखान से मिलने चले। भेंट का स्थान पहाड़ी के मध्य में था। अफजलखान के शिविर से भेंट का स्थान दिखाई नहीं पड़ता था। खान शामियाने में आया और शिवाजी की राह देखने लगा। शिवाजी को देखते ही वह उठा। क्षणभर के लिए दोनों की नजरें मिलीं, जैसे कि दो मित्र एक-दूसरे को आलिंगन में कस लेते हैं उस प्रकार मिलने के लिए खान ने अपने दोनों लंबे भीमकाय हाथ पसारे। शिवाजी भी हाथ फैलाये आगे बढ़े। अफजलखान शिवाजी को अपनी भुजाओं में जकड़ कर मारना चाहता था। उसी क्षण शिवाजी ने बाघनख से खान के पेट पर ऐसा वार किया कि खान की आँतें बाहर निकल आयीं। खान ने भी वार किया पर शिवाजी के लौह कवच ने उनकी रक्षा की। शिवाजी ने झपट कर अपनी तलवार चलायी। एक ही वार में खान का मस्तक कटकर धरती पर लुढ़क गया।

शिवाजी ने अपनी तलवार पर उस मुण्ड को रखा और वे दुर्ग पर चढ़ने लगे। उसी क्षण दुर्ग पर से तोपें चलीं और आकाशभेदी गर्जना करने

Scanned by CamScanner

लगीं। उधर खान के सिपाही सोच रहे थे कि अब तक तो खान ने शिवाजी को पकड़ ही लिया होगा। तब एकाएक शिवाजी के सैनिक उन पर चीते की फुर्ती से झपट पड़े। देवी तुलजा भवानी के अपमान का अब पूरा बदला लिया गया। खान की सेना परास्त हुई। शिवाजी पूर्णत: विजयी हुए। उन्होंने अपनी माता को एक उपहार भेजा। कौन सा उपहार? वह उपहार था – अफजलखान का सिर!

शिवाजी की कीर्ति देश-विदेश तक पहुँची। अफजलखान – वध की खबर सुनकर सब लोग शिवाजी को सराहने लगे। परन्तु बीजापुर के सुलतान पर दारुण दुख के काले बादल छा गये। संयमी शिवाजी को इस विजय का उन्माद नहीं चढ़ा व योजनानुसार उन्होंने आसपास के अनेक आदिलशाही दुर्ग जीत लिये।

बीजापुर के सुलतान ने इस बार एक नये सेनापति को चुना और 70,000 की सेना देकर उसे शिवाजी पर आक्रमण करने के लिए भेजा। सेनापति सिद्दी जौहर ने शिवाजी पर आक्रमण किया। तब शिवाजी पन्हालगढ़ दुर्ग में पहुँचे। आदिलशाह की सहायता के लिए अंग्रेज भी अपनी तोपें लेकर पहुँचे। सिद्दी जौहर ने पन्हालगढ़ पर घेरा डाला। धीरे-धीरे घेरा कसता गया। शिवाजी ने सोचा था कि वर्षा का प्रारम्भ होते ही घेरा ढीला पड़ेगा। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। आदिलशाह ने दिल्ली से भी मदद माँगी। परिणामस्वरूप इसी समय दिल्ली के बादशाह ने अपने मामा शाहिस्ताखान को एक लाख फौज देकर शिवाजी पर आक्रमण करने के लिए भेजा।

इस संकटकाल में शिवाजी की माता जीजाबाई ने शासन की बागडोर सुयोग्य व सुचारु रूप से सम्भाली। शिवाजी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि

Scanned by CamScanner

किसी प्रकार इस घेरे से बाहर निकलना होगा। परन्तु यह होगा कैसे? सिद्दी जौहर तो बड़ी दृढ़ता के साथ अपनी जिद पर अड़ा हुआ था। शिवाजी ने एक योजना बनायी। उन्होंने सिद्दी जौहर के पास एक दूत भेजकर यह कहलवाया कि, "मैं अपनी हार मानने के लिए तैयार हूँ। यदि आप कहें तो मैं कल अपने किले, आपके सुपुर्द किये देता हूँ। सुलतान मेरे अपराधों की क्षमा करें, यहीं मैं चाहता हूँ।"

शिवाजी ने घुटने टेक दिये हैं – यह समाचार सिद्दी जौहर की फौज में फैलते ही पूरी रात सैनिकों ने खुशियाँ मनाईं। शिवाजी के ये पत्र केवल उन्हें धोखा देने के लिए थे, यह आशंका उन्हें कतई नहीं हुई। उस रात्रि को बादल भीषण रूप से गरज रहे थे। बिजली कड़क रही थी और मूसलाधार वर्षा हो रही थी। ठीक उसी समय शिवाजी अपने 800 सैनिकों के साथ पन्हालगढ़ के बाहर चुपके से निकल आये और विशालगढ़ दुर्ग की ओर रवाना हो गये। घेरे के पहरेदार अपने तंबुओं में बैठे सोच रहे थे कि शिवाजी तो अब अपनी शरण में आ गया है। वे सब मनोरंजन मे मग्न थे। उन्हें यदि थोड़ी सी भी आशंका होती तो शिवाजी का परास्त होना अटल था। इसीलिए शिवाजी के सैनिक हर पग सतर्कता के साथ उठा रहे थे। भवानी माता की उन पर कृपा थी। शिवाजी की उस छोटी सी सेना ने सफलतापूर्वक घेरा पार किया।

मावला सैनिकों की वह छोटी टोली अपने स्वामी को पालकी में बैठाये तेजी से दौड़ रही थी। तभी एकाएक बिजली चमकी और वह सम्पूर्ण प्रदेश प्रकाशमय हो गया। सिद्दी जौहर के एक गुप्तचर ने उस भागती हुई सैन्य टोली को देख लिया। दौड़ते- हाँफते वह सिद्दी जौहर के पास पहुँचा और उसे शत्रु के निकल जाने की सूचना दी। इस समाचार को सुनते ही सिद्दी के सिर पर मानो गाज गिरी। उसने अपने जामात सिद्दी मसूद

Scanned by CamScanner

को बुलवाया और उसे बड़ी भारी घुड़सवार सेना देकर तेजी से शिवाजी का पीछा करने का आदेश दिया। शिवाजी ने देखा कि अब इन लोगों से बचना कठिन है। तब उन्होंने एक और योजना बनायी। वे झट से दूसरी पालकी में जा बैठे। वह पालकी एकदम भिन्न मार्ग पर दौड़ने लगी। शिवाजी की सेना में शिवाजी जैसा दिखनेवाले एक आदमी था। वह शिवाजी जैसे कपड़े पहनकर पहली पालकी में बैठ गया। सिद्दी मसूद इस पालकी को और उसके साथ के सैनिकों को पकड़ कर उन्हें सिद्दी जौहर के पास ले गया। परन्तु जब कैदी की पूछताछ हुई तब पता चला कि उसका नाम शिवाजी अवश्य था परन्तु वह प्रतापगढ़ का रहनेवाला एक नाई था। यह सुनकर सब लोग भौंचक्के रह गये।

आग बबूला होकर सिद्दी मसूद ने फिर से पीछा शुरू किया। तब तक शिवाजी अपनी सेना के साथ पच्चीस मील दूर चले गये थे। वे गजापुर की घाटी के पास आ गये थे। विशालगढ़ अब कुछ ही मील दूर था। मसूद के पाँच हजार सैनिक उनका पीछा कर रहे थे। शिवाजी के पास बाजी प्रभु देशपांडे नाम के एक पराक्रमी सरदार थे। वे भीम जैसे बलवान थे। उन्होंने प्रार्थना की– "महाराज, आप आधी सेना लेकर विशालगढ़ सुरक्षित पहुँच जायें। आधी सेना लेकर मैं इस घाटी में शत्रु-सेना का डट कर सामना करता हूँ। मैं उन्हें आगे नहीं बढ़ने दूंगा।"

समुद्री लहरों के समान आदिलशाही सैनिकों के दल पंक्तिबद्ध आ रहे थे। उस संकरे दर्रे में उन्हें बाजी प्रभु गाजर मूली की तरह काट रहे थे। घमासान युद्ध हुआ। बाजी का पूरा शरीर घावों से भर गया। वे खून से लथपथ हो गये। परन्तु तनिक भी विचलित हुए बिना वे वीरता से शाम तक लड़ते रहे। बाजी के अधिकांश सैनिक मारे गये थे। और अब तो बाजी पर शत्रु ने ऐसा घातक प्रहार किया कि वे मृतप्राय हो गये। तभी विशालगढ़ से

Scanned by CamScanner

चली तोप से पाँच संकेत हुए जिसका अर्थ था कि शिवाजी विशालगढ़ दुर्ग के भीतर सकुशल पहुँच गये थे। बाजी प्रभु ने उस संकेत ध्वनि को सुना। तब वे आनंद-विभोर हो उठे। उन्होंने तलवारें फैंक दीं और शांतचित्त से इहलोक यात्रा समाप्त की। उनके मुख पर कर्तव्यपूर्ति का संतोष था। हुतात्मा के बलिदान से वह दर्रा पवित्र हो गया। फलस्वरूप उस समय से उसे लोग 'पावनखिंड' याने पवित्र घाटी कहने लगे।

बीजापुर के सुल्तान का शिवाजी पर फिर से आक्रमण करने का हौसला नहीं रहा। परन्तु शिवाजी के राज्य पर शाहिस्ताखान के रूप में दूसरा महासंकट आ धमका था, उस ओर ध्यान देना आवश्यक था। इस आपत्ति से छुटकारा पाने के लिऐ शिवाजी ने एक साहसपूर्ण योजना बनायी। रमजान का महीना था। शाहिस्ताखान की सेना में अधिकांश अधिकारी एवं सैनिक रोजा रखते थे। वे दिनभर निराहार रहते थे। सहज ही रात में कुछ अधिक भोजन करते थे और फिर बेखबर सोते थे। वह दिन औरंगजेब के राज्यारोहण के वार्षिकोत्सव का था। उस रात दावतों का होना स्वाभाविक ही था। उस दिन दो हजार चुने हुए सैनिक लेकर शिवाजी राजगढ़ से नीचे उतरे। पुणे से दो मील दूरी पर शिवाजी ने अपना पड़ाव डाला। पुणे के जिस लालमहल में शिवाजी का बचपन बीता था, उसी 'लालमहल' में शाहिस्ताखान ने अपना डेरा जमाया था। पुणे में और आसपास के विस्तीर्ण प्रदेश में एक लाख मुगल सेना की छावनी लगी हुई थी।

शिवाजी का बचपन का साथी बाबाजी एक छोटी सेना लेकर मुगल-छावनी की ओर जा रहा था। उसके पीछे एक छोटा-सा दल लेकर शिवाजी भी चल रहे थे। बाबाजी ने अपने दलसहित छावनी मे प्रवेश किया। पहरेदारों ने जब उन्हें टोंका और पूछा, तब बाबाजी बिना हिचकिचाये

Scanned by CamScanner

सहज भाव से बोले," हम तो गश्ती फौज के सिपाही हैं। हमारा पहरा खत्म हुआ। अब हम अपने मुकाम पर जा रहे हैं।" पहरेदारों को विश्वास हो गया। वे सब सैनिक छावनी में घुस गये। शिवाजी सीधे लालमहल के पिछले दरवाजे के पास पहुँचे। वहाँ से वे रसोईघर में पहुँचे। वहाँ जो भी थे, उन्हें मौत के घाट उतारा। इसके बाद वे शाहिस्ताखान के शयनकक्ष में पहुँचे।

उधर, अपने साथियों को लेकर शिवाजी भी भीतर आ गये। अब तो पूरा लालमहल "दगा, दगा!! शत्रु घुसा!" की आवाज से गूँज उठा। शाहिस्ताखान की पत्नियों ने खान को परदे के पीछे छिपा दिया। शिवाजी आगे बढ़े और उन्होंने अपनी तेग चलायी। खान की तीन उंगलियाँ कट गयीं। खान खिड़की से कूद कर भागने लगा। अब तक मुगल सेना सजग हो गई। लालमहल के अन्दर अब पूरी तरह अफ़रातफ़री मची हुई थी। सब चिल्ला रहे थे- मारो, काटो। इसी भ्रमजाल का लाभ उठाते हुए शिवाजी के सैनिक बाहर निकले। पूर्वनियोजित स्थान पर घोड़े तैयार खड़े थे। वे उन पर चढ़े और सकुशल सिंहगढ़ पहुँचे।

इस घटना से शिवाजी के सब शत्रु घबरा गये। आज तक वे उसे केवल 'पहाड़ी चूहा' कहते थे। अब उन्हें लगा कि शिवाजी के पास कुछ मायावी सामर्थ्य है। वह कोई असाधारण शक्ति है। पूरे समाचार को सुनते ही औरंगजेब शर्मसार हुआ। दण्डस्वरूप उसने शाहिस्ता खान की नियुक्ति बंगाल के सूबे में की।

स्वराज्य का निर्माण करना, सुसज्ज स्थलसेना और नौसेना रखना, राज्य में उत्तम शासन चलाना, और सबसे बड़ी बात क्रूर आक्रामकों का सामना करना, इन सब बातों के लिए विपुल धन की आवश्यकता थी। इतना अधिक धन प्राप्त करने का दूसरा तो कोई उपाय था नहीं। अतः

Scanned by CamScanner

आक्रमणकारियों से ही पैसा वसूल करने का शिवाजी ने निश्चय किया। उन्होंने औरंगजेब का धनभंडार लूटने की योजना बनायी। उन दिनों में सूरत को कुबेरनगरी अर्थात धनपतियों की नगरी कहा जाता था। शिवाजी ने वहाँ से अतुल धनसंपत्ति प्राप्त की।

मुगल सम्राट के पंजों में

अब तो औरंगजेब के लिए शिवाजी के कृत्य असहनीय हो गऐ। शिवाजी को समाप्त करने के लिये बड़ी भारी सेना लेकर वह स्वयं ही दक्षिण में आना चाहता था। परंतु तथाकथित 'पहाड़ी चूहे' के नाखून कितने तेज हैं यह उसने देख लिया था। अत: उसने विचारपूर्वक एक योजना बनायी। सिंह को जीतने के लिए सिंह को ही भेजने का उसने निश्चय किया। इस कार्य के लिए उसने राजा जयसिंह को चुना। जयसिंह बड़ा योद्धा और वीर था। वह कुशल सेनापति भी था। वास्तव में, इतनी बड़ी योग्यता का व्यक्ति विदेशियों की सेवा में ही अपने आप को धन्य मानता रहा, यह बड़ी लज्जा की बात थी। विशाल सेना लेकर जयसिंह दक्षिण में आया। उसने बीजापुर के सुलतान के साथ परस्पर सहायता की संधि कर ली। शिवाजी के साथ जयसिंह का युद्ध अनेक मोर्चों पर प्रारंभ हुआ। एकाएक शिवाजी ने जयसिंह को पत्र लिख मित्रसंधि का प्रस्ताव भेजा। यहाँ तक कि शिवाजी स्वयं जयसिंह से मिले और उन्होंने दिल्लीपति से एकनिष्ठ रहने का उन्हें आश्वासन दिया।

शिवाजी गिरिकंदराओं में स्वतंत्र वृत्ति से विचरनेवाले वनराज केसरी जैसे थे। वे बादशाह के सामने एकाएक इतने क्यों झुक गये? अनेक लोगों ने सोचा कि शायद इसके पीछे कुछ गुप्त रहस्य है। यह संभव है कि सेवा करने के बहाने शिवाजी दिल्ली जायेंगे और प्रत्यक्ष औरंगजेब पर आक्रमण कर उसे समाप्त करेंगे। कदाचित् उनका यह कृत्य उनके जीवन

Scanned by CamScanner

का सबसे बड़ा, साहसपूर्ण तथा गूढ़ कूटनीतियुक्त कार्य था। तदनुसार शिवाजी औरंगजेब से मिलने के लिये अपने राज्य से चले। उनका पुत्र संभाजी भी उनके साथ था। घर पर, स्वराज्य में, सब को बड़ी उत्कंठा थी कि क्या होगा? मार्ग में स्थान-स्थान पर हिन्दू जनता ने, उनका बड़ा स्वागत किया और उनके प्रति आदरभाव प्रकट किया। शिवाजी आगरा पहुँचे। औरंगजेब भी कूटनीति में कम नहीं था। शिवाजी को उसने कभी अपने निकट नहीं आने दिया। दरबार में भी उनका स्थान बहुत दूर रखा। इन सब बातों से शिवाजी की आशाओं पर पानी फिर गया। औरंगजेब ने शिवाजी का अपमान किया। शिवाजी को सम्मान के साथ रखने का औरंगजेब ने जयसिंह को वचन दिया था। वह उसने नहीं निभाया। शिवाजी बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने भी औरंगजेब का अपमान किया और वे दरबार छोड़कर चले गये।

उसने शिवाजी को बंदीग्रह में ही मार देने की आज्ञा दी।

शिवाजी ने भी अपना स्वाभाविक धैर्य नहीं खोया। बल्कि उस कठिन घड़ी में उनकी बुद्धि और हिम्मत दोनों अधिक तेज़ी से काम करने लगी। अचानक शिवाजी बीमार पड़ गये। उनका स्वास्थ्य अधिकाधिक बिगड़ने लगा। साथ आए हुए मराठा सैनिकों को अपने प्रान्त में जाने की अनुमति देने के लिए उन्होंने औरंगजेब से प्रार्थना की। औरंगजेब को लगा कि यह तो और ठीक रहेगा। औरंगजेब ने अनुमति दे दी। स्वास्थलाभ के लिए आशीर्वाद पाने के लिए शिवाजी फकीरों, साधुसंतो तथा बैरागियों के पास मिठाइयाँ भेजने लगे। नगर में अमीरों के पास शिवाजी तरह-तरह के नजराने भेजने लगे। इन सब बातों के लिए औरंगजेब की अनुमति प्राप्त थी। औरंगजेब जैसे चतुर आदमी के मन में भी शंका नहीं आयी। शिवाजी को मारने का दिन निश्चित था। ठीक उसके एक दिन पहले शिवाजी की

Scanned by CamScanner

बीमारी ने गंभीर रुप धारण किया। यहाँ तक कि वे सुधबुध खो बैठे। नित्य की भाँति मिठाई के पिटारे भीतर लाये गए। अब तक रुग्णशय्या पर पड़े हुए शिवाजी एकदम उठे और पिटारे में जा बैठे। उनके पुत्र संभाजी को भी उसी प्रकार बैठाया गया। उसी क्षण नौकरों ने पिटारों पर ढक्कन चढ़ाये और उन्हें उठाकर चलने लगे।

प्रतिदिन के अनुभव से पहरेदारों को अब विश्वास हो गया था कि पिटारों में मिठाई ही जाती है। उस दिन भी कोतवाल फौलादखान ने कुछ पिटारों की जाँच की। उनमें केवल मिठाई थी। सुदैव से, जिनमें शिवाजी और संभाजी छिपे थे उन पिटारों पर उसका हाथ नहीं पड़ा। माँ भवानी की कृपा, शिवाजी का चातुर्य और फौलादखान का अहंकार इनका ठीक मेल बैठा। भगवान की इच्छा शिवाजी को जीवित रखने की थी। इसीलिए फौलादखान ने कहा, "जाने दो।"

कारागृह में शिवाजी के बिस्तर पर उनके मित्र हिरोजी ठीक उसी ढंग से सो गये। शिवाजी की शाही अंगूठी उसने अपने हाथ में पहन ली थी। उनकी पूरी देह दुशाले में ढकी हुई थी, परन्तु हाथ उसने जानबूझकर बाहर निकाल रखा था। निष्पाप मुद्रा धारण किये मदारी मेहतर नाम का लड़का 'शिवाजी'के हाथ-पैर दबा रहा था। फौलादखान बीच-बीच में आकर झाँकता था और शिवाजी के स्वास्थ्य के बारे में पूछता था। दूसरे दिन शाम को 'शिवाजी' उस बिस्तरे से उठा। उसने उस बिस्तर पर रजाई, तकिया आदि की ठीक ऐसी रचना की कि ऐसा लग रहा था जैसे कोई आदमी सोया हुआ है। उसने अपने हमेशा के कपड़े पहने और बाहर आया। उसने पहरेदार से हाथ जोड़कर कहा, "जरा आवाज कम करो, महाराज की तबियत ज्यादा खराब है। अभी अभी झपकी लगी है। मैं

Scanned by CamScanner

दवाई लाने जा रहा हूँ।" इस प्रकार हिरोजी बाहर निकल आया। कुछ समय बाद मदारी भी इसी ढंग से वहाँ से खिसका। बिस्तर पर ओढ़नों के बने 'शिवाजी' सोये हुए थे और बाहर हाथ में नंगी तलवारें लिये पहरेदार कड़ा पहरा दे रहे थे!!

सुबह हुई। शिवाजी के 'सर-कलम' के लिए वही दिन निश्चित किया गया था। फौलादखान भीतर आया। वहाँ पर विचित्र शांति विद्यमान थी। वह कुछ शंकित हुआ। आगे बढ़कर उसने देखा कि 'शिवाजी' तो सोये हुए हैं। एक क्षण के लिए आश्वस्त हुआ कि सब ठीक है। परंतु थोड़ी ही देर में उसके ध्यान में आया कि यहाँ कोई हलचल नहीं है। शिवाजी कहीं मर न गया हो! उसने ओढ़ना हटाया और देखा कि वहाँ तो केवल रजाई व तकिया ही हैं। काटो तो खून नहीं- उसकी यह हालत हो गयी। फौलादखान की और विशेषत: औरंगजेब की क्या स्थिति हुई होगी इसकी आप कल्पना कर सकते हैं। औरंगजेब ने उसी क्षण अपनी सेना को शिवाजी को पकड़ने के लिए सब दिशाओं में भेजा।

शिवाजी और संभाजी के लिए पूर्वनियोजित स्थान पर घोड़े तैयार थे। वे पिटारों में से निकले, घोड़ों पर सवार हुए और दक्षिण की ओर चले। राह में समर्थ रामदास स्वामी के मठों का उन्हें बड़ा उपयोग हुआ। अन्त में साधु संन्यासी का वेश बनाकर शिवाजी राजगढ़ पहुँचे। क्षणभर के लिए उसकी माता जीजाबाई तक उन्हें पहचान न सकीं और जब उन्होंने पहचाना तब एकदम अपने महान सुपुत्र को गले लगा लिया। उनकी आँखों से आनंदाश्रु बहने लगे। माँ-बेटे का यह अलौकिक मिलन था।

भारत के दक्षिण में शिवाजी के जो शत्रु थे, उनके कानों तक जब शिवाजी के आगरा से मुक्त होने का समाचार पहुँचा, तब वे बहुत घबराये। पूरे देश में शिवाजी की कीर्ति फैल गयी। शिवाजी ने अपने युग के सबसे

Scanned by CamScanner

बड़े कपटी व क्रूर राजनीतिज्ञ औरंगजेब की आँखो में धूल झोंकी थी। उसकी नाक के नीचे से, उसकी राजधानी में से, नंगी तलवारें हाथ में लिये जहाँ रात-दिन पहरेदारों का कड़ा पहरा था, वहाँ से शिवाजी मुक्त हुए थे। चारों तरफ दौड़ाये हुए हजारों मुगल सैनिकों को चकमा देकर उन्होंने एक हजार मील का रास्ता तय किया था। ऐसा साहस, आत्म विश्वास और चातुर्य कोई महामानव ही कर सकता है!

धर्मप्रतिपालक

सम्पूर्ण हिन्दू-समाज के लिए प्रेरणादायक हिन्दू-साम्राज्य की शिवाजी ने स्थापना की। परंतु अभी तक शास्त्रों के अनुसार उनका विधिवत सिंहासनारोहण नहीं हुआ था। इसलिये कुछ लोग उन्हें राजा मानने से इन्कार करते थे। शिवाजी के जीवन की इस त्रुटि को पूर्ण करने के लिए काशी के एक विद्वान पंडित अग्रसर हुए। उनका नाम गागाभट्ट था। उन्होंने यथाशास्त्र शिवाजी का राज्याभिषेक किया। यह महत्त्वपूर्ण घटना सन् 1674 में संपन्न हुई। उस समय शिवाजी की आयु 44 वर्ष की थी। दुर्गम एवम् सर्वश्रेष्ठ रायगढ़ दुर्ग को राजधानी बनाया गया। अपनी पूजनीय माताजी के चरण स्पर्श कर तथा उनसे आशीर्वाद प्राप्त कर शिवाजी रत्नजड़ित सुवर्णसिंहासन पर आसीन हुए। गागाभट्ट ने उनके सिर पर स्वर्णछत्र का राजचिन्ह सम्हाला और उन्हें छत्रपति घोषित किया। सुहागिनों ने उनकी आरती उतारी। साधुसन्तों ने उन्हें आशीर्वाद दिये। इस उत्सव में भाग लेने के लिए दूर-दूर से हजारों लोग आये थे। वे आनंदविभोर हो उठे। मुक्तकंठ से वे जयजयकार करने लगे "छत्रपति श्री शिवाजी महाराज की जय।" रायगढ़ दुर्ग से तोपों की सलामी हुई। बीजापुर के सुलतान ने तथा अंग्रेजों ने शिवाजी को स्वतंत्र राजा के रूप में मान्यता दी और कीमती नजराने भेजे। इस महान् घटना को देख समर्थ रामदास के मन में जो आनन्द की लहरें उठने लगीं वे काव्यरूप लेकर प्रकट हुई- "इस भूमि का

Scanned by CamScanner

उद्धार हुआ है। धर्म का उद्धार हुआ है। आनन्दमय स्वराज्य का उदय हुआ है।"

केवल शत्रु को पराजित कर स्वराज्य की प्रस्थापना करने में शिवाजी को संतोष नहीं था। अपनी समस्त प्रजा को सुख एवं समाधान की प्राप्ति हो –इस हेतु उन्होंने तरह–तरह के सुधार किये। अपनी प्रजा को वे देवता स्वरूप मानते थे। प्रजा का कोई भी कष्ट उनके लिए असहनीय था। शत्रुओं को दबाने के लिए, उनके सैनिकों को दूर–दूर तक जाना पड़ता था। अपने सैनिकों को शिवाजी ने जो आज्ञा दी थी वह उनकी प्रजाहितदक्षता की परिचायक है। "रास्ते में जो जनता होगी उसे किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं पहुँचना चाहिये। खेतों में जो फसल खड़ी होगी उसके पत्ते तक को किसी को छूना नहीं चाहिये।" आज्ञा का उल्लंघन करनेवाले को शिवाजी हमेशा बहुत कड़ी सजा देते थे। गाँव के भोलेभाले किसानों की दृष्टि में शिवाजी प्रेमस्वरूप थे। उस समय किसान, धनी जमींदारों के अन्याय से त्रस्त थे। शिवाजी ने ऐसे दुष्ट जमींदारों से जमीनें छीन लीं और किसानों को बाँट दीं।

उस समय हिन्दू–समाज में आज से भी बढ़कर अधिक छुआछूत का रोग फैला हुआ था। समाज ने अपने कुछ भाइयों को 'अछूत' मानकर उन्हें अपने ही समाज से अलग कर दिया था। परन्तु शिवाजी का उन सब के प्रति अगाध प्रेम था। शिवाजी ने उन्हें अपनी सेना में भरती होने के लिए आमंत्रित किया और उनकी योग्यतानुसार उन्हें उच्च पद तथा अधिकार भी प्रदान किये। उन सबने शिवाजी की निष्ठापूर्वक सेवा की। शिवाजी का संदेश था–एक ही धर्म के अनुयायियों को आपस में कभी ईर्ष्या व भेदभाव नहीं करना चाहिये, द्वेष नहीं रखना चाहिये इसका प्रत्यक्ष आदर्श उन्होंने स्वयं प्रस्तुत किया।

Scanned by CamScanner

अपनी प्रजा को शिवाजी उत्तम शिक्षा देना चाहते थे। संस्कृत भाषा को अपना दिव्य स्थान देने के लिऐ संस्कृत शब्द प्रचलित किये।

उन दिनों अनेक हिन्दू जबरदस्ती से मुसलमान बनाये जाते थे। वे फिर से हिन्दू बनना चाहते थे,परन्तु हिन्दू-समाज ऐसे धर्मान्तरितों को प्रवेश नहीं देता था। शिवाजी को यह ठीक नहीं लगा। अत: जो भी पूर्ववत अपने हिन्दू-धर्म में आना चाहते थे, उन सबका शिवाजी ने शुद्धिकरण किया। अनेक लोग समुद्र यात्रा को निषिद्ध मानते थे। इस मूर्खता को शिवाजी ने समाप्त किया। उन्होंने समुद्री युद्ध किये और कई जलदुर्ग बनवाये।

भ्रष्टाचारी और स्वदेशद्रोही लोगों पर शिवाजी बहुत क्रोधित होते थे। अपनी मातृभूमि को धोखा देनेवालों का वे बड़ा तिरस्कार करते थे। स्वयं का पुत्र भी यदि देश के विरुद्ध काम करता तो वे उसे अवश्य दण्ड देते। शिवाजी के रूप में न्याय ही साकार हुआ था। अपने सम्बन्धियों के लिए भी उन्होंने कभी पक्षपात नहीं किया। सद्गुणी और कर्तृत्ववान लोगों को वे सदा प्रोत्साहन देते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि, उनके राज्य में गुणवानों की उन्नति हुई और वे ही उच्च पदों पर आरूढ़ हुए। इस प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शिवाजी ने आवश्यक न्यायोचित परिवर्तन किये।

शिवाजी के स्वराज्य-निर्माण की यह अत्यंत रोमांचकारी अभिव्यक्ति हैं। इसे पढ़ते हुए हमें बार-बार ऐसा प्रतीत होता है कि हमें शिवाजी का आदर्श सदा अपने सम्मुख रखना चाहिये। शिवाजी ने अपने देश तथा धर्म की रक्षा के लिए अपार कष्ट सहे। उन्होंने कभी अपने प्राणों की परवाह नहीं की। तीन सौ से अधिक वर्ष बीत जाने पर आज भी उस महापुरुष की स्मृति मात्र से जन-जन में नवप्रेरणा व नव ऊर्जा जागृत होती हैं।

Scanned by CamScanner